मृदा, पौधों एवं जलवायु विश्लेषण के तरीकों पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण सत्र समापन

केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल द्वारा दिनांक 13 दिसम्बर, 2008 से प्रारम्भ हुये मृदा, पौधों एवं जलवायु विश्लेषण के तरीकों पर 10 दिवसीय प्रशिक्षण कोर्स का आज 22 दिसम्बर 2008 को समापन हो गया । प्रशिक्षण कोर्स निदेशक एवं प्रधान वैज्ञानिक डा0 नेपाल सिंह यदुवंशी के अनुसार इस प्रशिक्षण कोर्स में देश के 4 विभिन्न प्रान्तों हिमाचल, जम्मु–कश्मीर, गुजरात तथा उत्तर प्रदेश में स्थित वैज्ञानिक एवं औधोगिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली (CSIR) के अन्तर्गत आने वाले कालेजों/संस्थानों के लगभग 10 वैज्ञानिकगणों ने भाग लिया । प्रशिक्षण सत्र के दौरान विशेष योग्यता प्राप्त वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों जैसे लवणग्रस्त मृदाओं व निम्न गुणवत्ता जल की पहचान के अन्तर्गत मृदा एवं पौधों की सुक्ष्म व स्थूल तत्वों एवं मृदा के भौतिक गुणों तथा प्रोफाइल के विश्लेषण व प्रबन्धन के साथ–साथ मृदाओं में फसल उत्पादन के समय विभिन्न तत्वों में रासायनिक परिवर्तन, क्षारीय मृदाओं में जलवायु परिवर्तन का तत्वों एवं पानी के प्रबन्धन पर प्रभाव, व प्रोफाइल अध्ययन मृदा उर्वरता एवं पानी का उचित रख–रखाव, आदि विषयों पर प्रेक्टीकल विश्लेषण के तरीके बताये गये जिससे प्रशिक्षण कोर्स के प्रतिभागियों के ज्ञान वर्धन के साथ–साथ, लवण मृदायुक्त प्रान्तों को भी लाभ होगा । कोर्स निदेशक डा0 यदुवंशी ने पिछले 10 दिनों के अन्दर किये गये पूरे कार्यक्रम का ब्योरा दिया

प्रशिक्षण सत्र के दौरान, व्याख्यानों एवं प्रैक्टीकल अभ्यास के अलावा, क्षारीय एवं लवणग्रस्त क्षेत्र /क्षारीय ग्रस्त पानी के क्षेत्रों तथा उपसतह जल निकास पद्यति द्वारा लवणयुक्त पानी के सुधार आदि पर किये जा रहे/गये शोध क्षेत्रों का भ्रमण भी कराया गया । यह प्रशिक्षण कोर्स बैज्ञानिक एवं औधोगिक अनुसंधान परिषद, (सी0एस0आई0आर0,) नई दिल्ली नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित किया गया ।

समापन समारोह के मुख्य अतिथि एवं केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा0 गुरबचन सिंह ने अपने अभिभाषण में किसानों की समस्याओं से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर अधिक ध्यान देने पर जोर दिया उन्होने कहा कि लवणग्रस्त मृदाओं एवं पानी की उचित व नियमित जांच आवश्यक है ताकि मृदा व पौधों में होने वाले सुक्ष्म व स्थूल तत्वों का पता लगाया जा सकें । उचित तरीके से टिकाऊ फसल उत्पादन लेना तथा Global Warming को देखते हुये लवणग्रस्त मृदाओं, पौधों, एवं जलवायु विश्लेषण प्राथमिकता होनी चाहिए। संस्थान के निदेशक डा0 गुरबचन सिंह ने इस अवसर पर देश के विभिन्न प्रान्तों से आये वैज्ञानिकों का संस्थान में आने पर स्वागत किया तथा क्षारीय मृदाओं की दशा आदि के साथ–साथ जलवायु परिवर्तन को देखते हुये इन मृदाओं में टिकाऊ फसल उत्पादन पर प्रकाश डालते हुए Soil health पर भी चर्चा की । निदेशक द्वारा सभी प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के प्रमाणपत्र, वितरित किये गये ।

संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डा0 एस0के0 चौधरी ने मुख्य अतिथि/ निदेशक, प्रशिक्षण कोर्स के आयोजन में सहयोगियों, प्रैस मीडिया आदि का धन्यवाद किया ।